AUDITING

B.Com. Honours Part-1 Paper-2

Topic *– Depreciation*

By- Dr. Jitendra Kumar

P.G. Dept. of Commerce & Business Management

H.D. Jain College, Ara, Bhojpur, Bihar- 802301

ह्रास (DEPRECIATION)

अर्थ (Meaning)

किसी भी व्यावसायिक संस्थानों में विभिन्न प्रकार के स्थायी सम्पत्तियों का प्रयोग किया जाता है, जैसे - भवन, मशीन, प्लांट, फर्नीचर आदि। जैसे-जैसे इनका प्रयोग होता जाता है इनके मूल्य एवं आयु कम होते जाते हैं और प्रत्येक सम्पत्ति का लगातार प्रयोग करने पर एक ऐसी स्थिति आ जाती है कि वह सम्पत्ति बेकार हो जाती है तथा इसकी जगह पर दूसरी सम्पत्ति प्रतिस्थापित की जाती है। यह पूँजीगत हानि होती है। सम्पत्ति के बेकार होने का यह कमी या क्रम ही ह्रास (Depreciation) कहलाता है।

परिभाषाएँ (Definitions)

विभिन्न विद्वानों द्वारा ह्रास की परिभाषाएँ दी गयी हैं जो निम्नलिखित हैं—

कार्टर के अनुसार, "एक सम्पत्ति के मूल्य में किसी भी कारण से घटते-घटते एवं स्थायी रूप से होने वाली कमी को ह्रास कहते हैं।" (Depreciation is the gradual and permanent decrease in the value of the assets from any cause)

जे० आर० बाटलीबॉय के अनुसार, "यह एक व्यापारिक ज्ञान की बात है कि सभी स्थायी सम्पत्तियाँ (जैसे- प्लाण्ट, मशीनरी,

औजार, भवन, पट्टे की सम्पत्ति, मशीनरी आदि) जैसे-जैसे पुरानी होती जाती हैं उनके मूल्य में घटते-घटते कमी होती जाती है तथा व्यापार में लगातार प्रयोग के कारण वे बेकार हो जाती हैं। "The term depreciation as applied to the assets of a business means permanent decline in value of the assets due to wear and tear or from any other cause." स्पाइसर एवं पेगलर (Spicer and Peglar) के शब्दों में, "ह्रास एक सम्पत्ति के कार्यशील जीवन में होने वाली सम्पत्ति की एक माप है, जो एक निश्चित समय में किसी भी कारण से हुई हो।" (Depreciation may be defined as the measure of exhaustion of the effective life of an asset from any cause during a given period.)

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी भी स्थायी सम्पत्ति के प्रयोग से घिसने, समय व्यतीत होने, नये आविष्कार होने, फैशन परिवर्तन होने तथा नष्ट होजाने या किसी भी कारण के परिणाम स्वरूप मूल्य में जो निरंतर कमी आती है, तो उसे मूल्य ह्रास कहा जा सकता है।